



बकरियों में थनैला रोग

सुरिंदर सिंह* और दिनेश कुमार**

मानव सेहत के लिए बकरियों के दूध की गुणवत्ता की जानकारी बहुत तेजी से आम जनता तक पहुंच रही है। लोग पहले बकरी के दूध का सेवन करने से परहेज करते थे। अब उसकी गुणवत्ता के बारे में लोग जागरूक होने लगे हैं। यही कारण है कि बकरी के दूध की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। इसी को देखते हुए भारत के विभिन्न राज्यों में कुछ लोग बकरीपालन का काम आधुनिक तरीके से कर रहे हैं। इस आधुनिक तरीके से बकरीपालन में बकरीपालकों को कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इनमें प्रमुख समस्या हैं थनैला रोग, जिसको आम लोग अपनी भाषा में थनों का जहर भी कहते हैं। यह बैक्टीरिया, वायरस, माइक्रोप्लाज्मा, फंगस यीस्ट आदि के जीवाणु का संक्रमण थनों में होने से होता है। यह जीवाणु ज्यादातर दूध निकलने वाले द्वार से थनों में प्रवेश करके थनैला रोग करता है।

थनैला रोग के लक्षण जैसे-दूध का कम होना, दूध के रंग में बदलाव, दूध के स्वाद में फर्क आना, थनों में सूजन तथा लाली आना, थनों के ऊपर त्वचा पर तापमान में वृद्धि होना, पशुओं को थनों में दर्द महसूस होना, पशु की भूख में कमी होना, लंगड़ेपन की समस्या जैसे लक्षण थनैला रोग होने का संकेत देते हैं। ये सब लक्षण थनैला रोग की अवधि तथा स्थिति पर निर्भर करते हैं।

क्यों फैलता है थनैला रोग?

बकरी के रहने वाले स्थान की अगर समय पर सही साफ-सफाई नहीं की जाए, तो बकरियों के मेमनों में कई बार सांस लेने वाली नली का संक्रमण हानिकारक जीवाणुओं

से होता है। ऐसे संक्रमित मेमनों का उपचार करके ही बकरी का दूध पिलाना चाहिए।

थनों पर चोट या घाव आने से संक्रमण के कीटाणु थनों में प्रवेश करके थनैला रोग करते हैं। इसलिए घाव या चोट का सही तरीके से उपचार करना चाहिए।

बकरियों पर किसी भी प्रकार का तनाव जैसे-अचानक खाने-पीने के पदार्थों में बदलाव करना, पालन-पोषण की प्रक्रिया में अचानक किसी तरह का बदलाव करने आदि से हानिकारक जीवाणुओं का प्रकोप बढ़ जाता है। पशुओं को संतुलित

थनैला रोग के प्रकार

थनैला रोग बकरियों में तीन रूप में पाया जाता है; क्लीनिकल अवधि, सबक्लिनिकल अवधि तथा क्रॉनिक रूप में। क्लीनिकल अवधि में थनैला रोग के लक्षण हमें थनों में देखने को मिलते हैं, जैसे-थनों की सूजन होना, थनों के ऊपर लाली होना, थनों का नीले रंग का होना, थनों के तापमान में वृद्धि होना, दूध का कम होना, स्वाद में अलग होना। थनैला रोग की दूसरी अवधि है सबक्लिनिकल। इस स्थिति में थनों पर किसी तरह का बदलाव देखने को नहीं मिलता। सबक्लिनिकल थनैला रोग में थनों के ऊपर तथा पशु में किसी भी तरह का बदलाव देखने को नहीं मिलता। यदि सबक्लिनिकल थनैला रोग का सही समय पर इसकी जांच करके उपचार नहीं किया जाए, तो यह थनैला रोग की क्रॉनिक अवधि के रूप में बदलकर थनों को हमेशा के लिए खराब कर देता है।

*सहायक प्राध्यापक, कृषि विज्ञान केंद्र, पठानकोट (पंजाब); **पशु चिकित्सा सहायक सर्जन, उधमपुर (जम्मू व कश्मीर)



थनैला रोग से ग्रस्त बकरी

आहार न मिलने से पशुओं के शरीर में रोगों के प्रति लड़ाई करने की ताकत में कमजोरी आती है।

मक्खियां पशु तथा दूषित वातावरण से संक्रमित जीवाणु पशुओं के थनों के दूध निकलने वाले द्वार के ऊपर बैठकर थनैला फैलाने का काम करती हैं।

थनैला रोग से बचाव कैसे करें

स्ट्रिप कप का प्रयोग पशु के शुरूआती दूध की जांच करने के लिए किया जाता

है। इसमें पशुओं का शुरूआती दूध स्ट्रिप कप के ऊपर डालकर उससे अनुमान लगाया जाता है कि इसमें किसी भी प्रकार के अन्य अंश नहीं हैं। स्ट्रिप कप के ऊपर जाली की कुछ अंश बच जाएंगे, तो इसमें थनैला हो सकता है।

प्री टिट कप का प्रयोग करके

बकरियों का दूध निकालने से पहले पोटेशियम परमैंगनेट के एक प्रतिशत घोल से थनों को अच्छी तरह धो लेने के बाद थनों को साफ कपड़े से सुखा कर दूध निकालना चाहिए।

पोस्ट टिट डिप कप का प्रयोग

दूध निकालने से पहले अपने हाथ अच्छी तरह साफ कर लेने चाहिए। थनैला रोग से ग्रस्त पशुओं का दूध आखिर में निकालना चाहिए।

दूध निकालने के तुरंत बाद थनों के ऊपर ग्लिसरीन और बीटाडीन 1 और 5 की मात्रा के घोल के साथ बकरियों के थनों के दूध निकलने वाले मार्ग को घोल लगाकर बंद कर देना चाहिए।

रोगग्रस्त बकरियों के बच्चों को स्वस्थ बकरियों से अलग कर देना चाहिए तथा किसी भी पशु चिकित्सक से सलाह अनुसार इनका इलाज करना चाहिए।

थनैला रोग से ग्रस्त पशु को फार्म में स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए



उचित प्रबंधन द्वारा थनैला रोग से बचाव

तथा उसका दूध फार्म में सबसे आखिर में निकालना चाहिए।

थनैला ग्रस्त पशु का साफ-सफाई वाला कपड़ा स्वस्थ पशुओं के थनों पर इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

मेमने देने की संभावित तिथि से 30 से 40 दिनों पहले गर्भवती बकरियों का दूध निकालना बंद कर देना चाहिए तथा थनों में दवाई भर देनी चाहिए। ऐसा करने से थनैला रोग से बकरियों को बचाया जा सकता है।

बकरियों के बाड़े की साफ-सफाई रोज करनी चाहिए तथा समय-समय पर चूने का छिड़काव बकरियों के बाड़े में करना चाहिए।

पशु को हमेशा संतुलित आहार दें। इससे पशु की आंतरिक शक्ति बनी रहेगी तथा पशु कम रोगी होंगे।

ऊपर दिए सुझाव का पालन अगर हम अपने आधुनिक तरीके के बकरी फार्म में करें, तो बहुत हद तक बकरियों में थनैला रोग कम किया जा सकता है। ■

भाकृअनुप की द्विमासिक बागवानी पत्रिका 'फल फूल' मार्च-अप्रैल, 2023 अंक के प्रमुख आकर्षण

- ◆ फुटकल : अंजीर कुल का गुणकारी वृक्ष
- ◆ गाजर की वैज्ञानिक खेती
- ◆ मृदा पोषक तत्व सूचकांक का महत्व
- ◆ सफल कृषि-उद्यमी की गाथा
- ◆ खीरा में समेकित कीट प्रबंधन
- ◆ लौकी जैविक खेती की वैज्ञानिक तकनीकियां
- ◆ उद्यानिकी फसलों में घुलनशील उर्वरकों का उपयोग
- ◆ सौंफ है एक मूल्यवान मसाला उत्पाद
- ◆ फूलगोभी रोग और प्रबंधन
- ◆ औषधीय पौधों का महत्व
- ◆ चौलाई की खेती
- ◆ ब्रोकोली की लाभकारी खेती

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012

दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in